अलग करता है और इसे एक अलग पहचान प्रदान करता है।

प्रश्न–12. सिंधु घाटी सभ्यता की प्रमुख विशेषताओं का वर्णन करें।

Answer Steps :

भाग I. भूमिका

- सिंधु घाटी सभ्यता भारत की प्रथम विकसित सभ्यता
- कुछ प्रमुख विशेषताएँ

भाग II. शहरी केन्द्रों का अस्तित्व

- दो स्तरों में बसे शहर
- पश्चिम भाग दुर्ग
- पूर्व में निचला शहर
- पश्चिम में शासक वर्ग तथा पूर्व में श्रमिक आवास

भाग III. प्राचीन सुनियोजित नगर

- उत्कृष्ट संरचनाएँ
- उच्च कोटि की स्थापत्य शैली
- स्थापत्य में उपयोगितावादी दृष्टिकोण

भाग IV. उच्च कोटि के नागरिक प्रबंधन

- सड़कों, गलियों एवं नालियों के प्रबंध

भाग V. सैंधवकालीन धर्म

- धर्म की चार विशेषताएँ- मातृदेवी की उपासना, शिव की उपासना, वृक्ष पूजा एवं पशु पूजा।
- धार्मिक जीवन की पुरातात्विक साक्ष्यों से जानकारी
- बहुदेववाद एवं अनेक धार्मिक प्रथाएँ

Scanned with CamScanner

भाग VI. कला कौशल

- उन्नत अवस्था में
- पाषाण की कलाकृत्तियों की संख्या कम
- मूर्तिकला एवं धातुकला के पर्याप्त प्रमाण
- मनके बनाने के कारखाने कला कौशल का प्रमाण

भाग VII. वैज्ञानिक प्रगति

- पुरातात्विक साक्ष्यों से प्राप्त
- धातुओं की गलाने की तकनीक की जानकारी
- ज्योतिष विद्या से परिचित
- चिकित्सा शास्त्र का ज्ञान
- माप-तौल की जानकारी
- अंकगणित, दशमलव प्रणाली एवं रेखागणित की जानकारी

भाग VIII. आर्थिक स्थिति

- कृषि कार्य एवं पशुपालन मुख्य पेशा
- कृषि की उन्नत अवस्था
- व्यापार, वाणिज्य का विकास
- मुहरें एवं बंदरगाह स्थल- व्यापार वाणिज्य का साक्ष्य

भाग IX. लिपि की जानकारी

- लिपि चित्राक्षर
- पढ़े जाने योग्य नहीं
- आद्य ऐतिहासिक सभ्यता का प्रतीक
- मुहरों पर अधिकांश लिपियाँ

भाग X. सामाजिक जीवन

- जानकारी कल्पाना पर आधारित
- मातृ सत्तात्मक समाज
- समाज में चार वर्ग- शासक, विद्वान, व्यापारी एवं श्रमिक

भाग XI. राजनीतिक जीवन

- जानकारी का अभाव
- पश्चिमी क्षेत्र में दुर्ग
- शासक वर्ग का अनुमान
- सर्वमान्य मान्यता- व्यापारी वर्ग का शासन

भाग XII. निष्कर्ष

- विशेषताओं को सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक एवं सांस्कृतिक संदर्भों में समझे जाने की आवश्यकता
- विशेषताएँ सिंधु सभ्यता की अपनी पहचान

Scanned with CamScanner

उत्तर- सिंधु घाटी सभ्यता भारतीय उपमहाद्वीप की प्रथम विकसित सभ्यता थी। इसकी कुछ प्रमुख विशेषताएँ थीं जो इसे अपने से पूर्व की सभ्यताओं एवं अपने समकालीन सभ्यताओं से अलग करती हैं। ये विशेषताएँ हैं:-

इस सभ्यता में **शहरी केंद्रों का अस्तित्व** था। शहर प्राय: दो स्तरों में बसे थे। पश्चिमी भाग में दुर्ग था और पूर्व में निचला शहर था। पूरब का भाग बड़ा होता था और उसमें श्रमिक आवास होते थे संभवत: पश्चिमी दुर्ग शासक वर्ग का था।

सिंधु सभ्यता के नगर **प्राचीनतम सुनियोजित नगर** थे। इसमें भवनों, इमारतों एवं अन्य पक्की ईंटों से बनी संरचनाएँ इसके **उच्च कोटि के स्थापत्य शैली** का प्रदर्शन करती है। स्नानागार, अन्नागार या गोदीबाड़ा जैसी संरचनाएँ प्रमाणित करती है कि स्थापत्य कला में उपयोगितावादी दृष्टिकोण की प्रधानता थी। सामान्यतया इसमें उलंकरण एवं विविधता का अभाव था वैसे अपवाद स्वरूप कालीबंगा के अलंकृत ईंट को लिया जा सकता है।

सिंधु घाटी सभ्यता से **उच्च कोटि के नागरिक प्रबंधन** के प्रमाण मिले हैं। नगर निर्माण योजना में सड़कों, गलियों एवं नालियों के प्रबंध पर विशेष ध्यान दिया गया था। सड़कों के किनारे कुड़ेदानों की व्यवस्था, रोशनी का प्रबंध, नालियों की व्यवस्था, पानी का प्रबंध इत्यादि स्पष्ट करते हैं कि नागरिकों को सुखी बनाने के लिए समुचित व्यवंस्था की गई थी। शहर में सड़कों का जाल बिछा था। सड़के एक दूसरे को समकोण पर काटती थी।

पुरातात्विक साक्ष्यों से **सैंधवकालीन धर्म** की जानकारी प्राप्त होती है। सिंधु घाटी के धर्म की चार मुख्य विशेषताएँ थी- मातृदेवी की उपासना, शिव की उपासना, वृक्ष पूजा एवं पशु पूजा। सिंधु वासियों के धार्मिक जीवन के संबंध में पुरातात्विक साक्ष्यों से प्रमुख तथ्य प्राप्त होता है- बहुदेववाद, मातृदेवी की पूजा, शिव पूजा, लिंग एवं योनि की पूजा, वृक्ष पूजा, पशु पूजा, जल पूजा, धार्मिक प्रथाएँ, नगर पूजा, अग्नि पूजा इत्यादि।

हड़प्पाकालीन **कला कौशल** उन्नत अवस्था में थी। सिंधु प्रदेश में पत्थर का अभाव था अत: पाषाण की कलाकृतियों की संख्या कम है फिर भी मूर्तिकला एवं धातु कला के पर्याप्त प्रमाण मिले हैं। मोहन जोदड़ों से एक सन्यासी की मूर्ति एवं हड़प्पा से प्राप्त कांसे की मूर्ति सबसे प्रसिद्ध है। धातुओं के आभूषण एवं बहुमूल्य पत्थरों के मनके बनाने के कारखाने उनके कला कौशल का प्रमाण देते हैं।

सिंधु सभ्यता के लोगों की **वैज्ञानिक प्रगति** की जानकारी भी पुरातात्विक साक्ष्यों से प्राप्त होती है। सिंधु वासियों को धातुओं के गलाने की तकनीक का पता था। वे ज्योतिष विद्या से भी परिचित थे। उन्हें चिकित्सा शास्त्र का भी ज्ञान था तथा तरह-तरह के रंगों का निर्माण करते थे। माप तौल प्रणाली व अग्नि कुंडो से पता चलता है कि उन्हें अंकगणित, दशमलव प्रणाली एवं रेखागणित के सिद्धान्तों की जानकारी थी।

Scanned with CamScanner

सिंधु सभ्यता के अंतर्गत **आर्थिक स्थिति** काफी मजबूत थी। कृषि कार्य एवं पशुपालन सिंधुवासियों का मुख्य पेशा था। सैंघव स्थलों से बड़े-बड़े धान्यागारों का मिलना कृषि की उन्नत अवस्था को प्रकट करता है। कृषि की उन्नत अवस्था ने व्यापर एवं वाणिज्य को जन्म दिया। अत्यधिक मात्रा में मुहरों का पाया जाना एवं बंदरगाह स्थलों के साक्ष्य के अतिरिक्त अन्य पुरातात्विक सामग्री आंतरिक एवं विदेशी व्यापर के विकसित होने का प्रमाण देते हैं।

सिंधु सभ्यता के लोगों को **लिपि की जानकारी** थी। यह लिपि चित्राक्षर थी। इस लिपि के नहीं पढ़े जाने के कारण हड़प्पा सभ्यता को आद्य ऐतिहासिक सभ्यता के अंतर्गत रखा जाता है और इसीलिए हमें इस सभ्यता के बारे में अधिक जानकारी प्राप्त नहीं होती है। अधिकांश लिपियां मुहरों पर प्राप्त हुए हैं।

हड़प्पा कालीन **समाजिक जीवन** के बारे में साहित्यिक जानकारियों का अभाव पाया गया है अत: हमारी जानकारी कल्पना पर अधिक आधारित है फिर भी मिट्टी की मूर्तियों के आधार पर हड़प्पाकालीन समाज के मातृसत्तात्मक होने और पुरातात्विक साक्ष्यों के आधार पर समाज में चार वर्ग-शासक, विद्वान, व्यापारी एवं श्रमिक के होने का अनुमान लगाया जाता है।

सिंधु घाटी सभ्यता के **राजनीतिक जीवन** के बारे में भी जानकारी का अभाव है फिर भी भौगोलिक वर्गीकरण के आधार पर पश्चिमी क्षेत्र में दुर्ग के अंतर्गत शासक वर्ग के होने का अनुमान लगाया जाता है। इस संदर्भ में विद्वानों में मतभेद है कुछ प्रतिनिधि सरकार तो कुछ जनतंत्र की बात करते हैं पर सर्वमान्य मान्यता यह है कि व्यापारी वर्ग के अधीन शासन तंत्र था।

निष्कर्षत: कहा जा सकता है कि सिंधु घाटी सभ्यता में अनेक ऐसे तत्व विद्यमान थे जो इस सभ्यता की विशेषताएँ थीं जिन्हें सामाजिक-राजनीतिक-आर्थिक एवं सांस्कृतिक संदर्भ में समझे जाने की आवश्यकता है। ये विशेषताएं सिंधु घाटी सभ्यता को अपनी अलग पहचान प्रदान करते थे।

Scanned with CamScanner